❖ परिशिष्ट

प्रथम परिशिष्ट – (क) वत्सराज उदयन पर आधारित प्रमुख संस्कृत रूपकों में उपलब्ध सूक्तियाँ

द्वितीय परिशिष्ट – (ख) सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

वत्सराज उदयन पर आधारित प्रमुख संस्कृत रूपकों में उपलब्ध सूक्तियाँ

संस्कृत साहित्य में प्राचीन काल से ही सूक्तियाँ एवं सुभाषित वाक्य अत्यधिक लोकप्रिय एवं प्रचलित रहीं। सूक्ति से आशय **"ऐसे नीतिपरक ज्ञान से है जो मानव के व्यवहारिक, सामाजिक जीवन के लिए अत्यधिक उपयोगी होता है "**। सूक्ति परक ज्ञान वाला व्यक्ति अपने जीवन में कभी–भी असफलता प्राप्त नहीं करता।

वत्सराज उदयन पर आधारित प्रमुख संस्कृत रूपकों की सूक्तियाँ अत्यधिक लोकप्रिय एवं प्रसिद्ध हैं। स्वप्नवासवदत्तम्, प्रतिज्ञायौगन्धरायणम्, रत्नावली, प्रियदर्शिका और तापसवत्सराजचरितम् की प्रमुख सूक्तियाँ इस प्रकार है।

स्वप्नवासवदत्तम् में उपलब्ध सूक्तियाँ

- **कालक्रमेण जगतः परिवर्तमाना चक्रार पंक्तिरिव गच्छति भाग्यपङ्क्तिः।**
  (स्वप्नवासवदत्तम् १/४)

अर्थ :– जिस प्रकार पहिये के आरे ऊपर–नीचे आते जाते रहते हैं, उसी प्रकार समय की गति के साथ मानव जीवन में सुख और दुःख की परिवर्तनशीलता चलती रहती है।

- **प्रद्वेषो बहुमानो वा संकल्पादुपजायते। (स्वप्नवासवदत्तम् १/७)**

  अर्थ :– वैर या आदर मन के भाव से ही उत्पन्न होते हैं। मन में बना हुआ दृढ़–विचार संकल्प कहलाता है।

- **सुखमर्थो भवेद् दातुं सुखं प्राणाः सुखं तपः।**
  सुखमन्यद् भवेत् सर्वं दुःखं न्यासस्य रक्षणम्।। (स्वप्नवासवदत्तम् १/१०)

  अर्थ :– धन देना आसान है, प्राण, तपस्या का फल और अन्य सब कुछ दे देना सरल है, किन्तु धरोहर की रक्षा करना कठिन है।

- **न हि सिद्धवाक्यान्युत्क्रम्य गच्छति विधिः सुपरीक्षितानि। (स्वप्न०१/११)**

अर्थ :– भाग्य ही सिद्धों की वाणी के अनुसार ही चलता है। क्योंकि भवितव्यता भली प्रकार परखे हुए सिद्धों के वचनों का उल्लंघन करके नहीं चलती है।

- **स्त्रीस्वभावस्तु कातरः ।** **(स्वप्नवास० ४/६)**

  अर्थ :– स्त्रियों का स्वभाव अधीर हुआ करता है।

- **प्रायेण हि नरेन्द्र श्रीः सोत्साहैरेव भुज्यते।** **(स्वप्नवास० ६/७)**

  अर्थ :– उत्साही व्यक्ति ही राज्यलक्ष्मी का उपभोग करते हैं।

- **दुःखं त्यक्तुं बद्धमूलोऽनुरागः स्मृत्वा स्मृत्वा याति दुःखं नवत्वम्।**

  (स्वप्नवास० ४/७)

  अर्थ :– दृढ़ अनुराग को छोड़ना बड़ा ही कठिन है। याद कर–कर दुःख नया होता है। आँसू बहाकर रोने से मनुष्य ऋण से ऊऋण हो जाता है।

- **एवं लोकस्तुल्यधर्मो वनानां काले–काले छिद्यते रूह्यते च। (स्वप्न० ६/१०)**

  अर्थ :– मनुष्य का जीवन भी वन के समान है। वन बार–बार काटा जाता है। और बार–बार पनप उठता है। उसी तरह मनुष्य भी बार–बार जन्मता और मरता है।

प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् में उपलब्ध सूक्तियाँ

- **सर्व हि सैन्यमनुरागमृते कलत्रम्।** **(प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् १/४)**

  अर्थ :– प्रेम के बिना सारी सेना स्त्री के समान युद्ध में अकिञ्चित् कर है।

- **भूमिभर्तारमापन्नं रक्षिता परिरक्षति।** **(प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् १/६)अर्थ** :–

  अर्थ :– सुरक्षित वसुन्धरा ने घोर संकटावस्था में पड़े हुए अपने स्वामी की कृतज्ञतापूर्वक रक्षा की है।

- **मार्गारब्धाः सर्वयत्नाः फलन्ति ।** **(प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् १/१८)**

अर्थ :– इस संसार में उत्साही मनुष्यों के लिए कोई भी कार्य असंभव नहीं होता। उचित ढंग से आरम्भ किये गये सभी कार्य या उपाय फलवान् होते हैं।

- **कन्याया वरसम्पत्तिः पितुः प्रायः प्रयत्नतः।**
  भाग्येषु शेषमायत्तं दृष्टपूर्वं न चान्यथा। (प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् २/५)

  अर्थ :– पिता के प्रयास से कन्या को वर की प्राप्ति होती है। किन्तु वर के अतिरिक्त उसके स्त्रक् चन्दनादि उपभोग की प्राप्ति कन्या के भाग्य पर निर्भर हैं। फिर जो भी काम भली– भाँति देख सुनकर किया जाता है। वह निष्फल नहीं होता।

- **धर्मस्नेहान्तरे न्यस्ता दुःखिताः खलु मातरः । (प्रतिज्ञायौग० २/६)**

  अर्थ :– विवाह योग्य कन्या की मातायें एक ओर तो यह सोचती हैं। कन्यादान न करने से धर्म नहीं, दूसरी ओर कन्यादान कर देने पर उनसे स्नेह का दुःख सताता है। वह दो मनों के मध्य में स्थित हो दुःख का अनुभव करती है।

- **नीतरत्ने भाजने को निरोधः। (प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् ४/११)**

  अर्थ :– रत्न के चोरी हो जाने पर मात्र शेष बचे पात्र की रक्षा करने से क्या लाभ होगा।

- **यो भर्तृपिण्डस्य कृते न युध्येत्। (प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् ४/२)**

  अर्थ :– जो व्यक्ति अपने स्वामी के लिए युद्ध न करे, उसे जल से परिपूर्ण मंत्रों से अभिमन्त्रित तथा दर्भ से परिवेष्टित नये शराव (मिट्टी का विशेष पात्र) श्राद्ध में न प्राप्त हो और वह नरक में जाये।

- **प्रभाते दृष्टदोषणां वैरिणां रजनी भयम्। (प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् ३/३)**

  अर्थ :– संसार से विरक्त व्यक्ति द्वारा दिन में किये जाने वाले छलों का पता लगने पर, ऐसे शत्रुओं को रात अधिक भयदायक लगती है। कहीं कोई मेरा छद्म वध न कर दे।

रत्नावली नाटिका की प्रमुख सूक्तियाँ

- **अचिन्त्यो हि मणिमन्त्रौषधीनां प्रभावः। (रत्नावली द्वितीय अंक पृ0सं0–६५)**

  अर्थ :– मणि, मन्त्र और औषधियों का प्रभाव अचिन्तनीय होता है।

- **आनीय झटिति घटयति विधिरभिमतमभिमुखीभूतः। (रत्नावली १/७)**

  अर्थ :– मनुष्य का भाग्य अनुकूल होने पर, दूसरे देश से भी, समुद्र के मध्य से भी तथा दिशाओं के अन्तिम भाग से भी इष्ट को लाकर शीघ्र ही मिला देता है।

- **ईदृशमत्यन्तमाननीयेष्वेपि निरनुरोधवृत्ति स्वामिभक्तिवृत्तम्।**

  (रत्नावली चतुर्थ अंक पृ0सं0 –१६६)

  अर्थ :– स्वामिभक्ति का व्रत अत्यन्त माननीय व्यक्तियों के प्रति जनापेक्षित व्यवहार करा देता है।

- **ईदृशं रूपं मनुष्यलोके न पुनर्दृश्यते। (रत्ना० द्वितीय अंक पृ0सं0 – ११५)**

  अर्थ :–ऐसा रूप या आलौकिक सौन्दर्य मनुष्य लोक में तो नहीं दिखाई देता है।

- **कस्मात् परिहासशीलतयेमं जनं लघु करोषि।**

  (रत्ना० द्वि० अंक पृ0सं0 –१०६)

  अर्थ :– सखी मजाक करके इस जन को क्यों लघु (अपमानित) कर रही हो। अर्थात् किसी व्यक्ति की मजाक बनाकर उसे अपमानित नहीं करना चाहिए।

- **किमिदकारणमेव पतङ्गवृत्तिः क्रियते। (रत्नावली चतुर्थ अंक पृ0सं0 –१६0)**

  अर्थ :– क्यों आप अकारण पतंगे की तरह आचरण कर रहे हैं।

- **प्रकृष्टस्य प्रेम्णः स्खलितमविषह्यं हि भवति।**

  (रत्ना० तृतीय अंक पृ0सं0–१५२)

  अर्थ :– उत्कृष्ट प्रेम की थोड़ी भी त्रुटि असह्य होती है।

- **दिष्ट्या वर्धसे समीहिताभ्यधिकया कार्यासिद्धया ।**

  (रत्ना०तृ० अंक पृ0सं0 –१३४)

  अर्थ :– अर्थ आप बड़े भाग्यशाली हैं कि अभीष्ट से भी अधिक कार्य की सिद्धि हो गयी।

- **दुरवगाहा गतिर्दैवस्य । (रत्नावली चतुर्थ अंक पृ0सं0 –१८७)**

  अर्थ :– भाग्य की गति जानी नहीं जाती ।

- **मनश्चलं प्रकृत्यैव । (रत्नावली ३/२)**

  अर्थ :– मन स्वभाव से ही चंचल तथा दुर्लक्ष्य है।

- **घुणाक्षरमपि कदापि संभवत्येव । (रत्नावली द्वितीय अंक पृ0सं0 – १२३)**

  अर्थ :– कभी घुणाक्षरन्याय से भी सम्भव हो जाता है।

प्रियदर्शिका नाटिका की प्रमुख सूक्तियाँ

- **तत्क्षणमपि निष्क्रान्ताः कृतदोषा इव विनापि दोषेण**

  प्रविशन्ति शङ्कमाना राजकुलं प्रायशो भृत्या।। (प्रियदर्शिका १/८)

  अर्थ :– जो प्रतिहारी अभी–अभी राजभवन से बाहर निकले हैं ऐसे भी भृत्य प्रायः राजकुल में सशंकभाव से प्रवेश करते है। उन्हें ऐसा लगता है, कि कुछ अपराध हो गया हो। यद्यपि उनसे कोई अपराध नहीं हुआ रहता है।

- **गुणैकपक्षपातिनां रिपोरपि गुणाः प्रीतिं जनयन्ति । (प्रिय० प्र० अंक पृ0सं0– १६)**

  अर्थ :– गुणज्ञ लोगों को ही शत्रुओं के गुणों से आनन्द प्राप्त होता है।

- **नास्ति खलु दुष्करं दैवस्य । (प्रिय०द्वि० अंक पृ0सं0– २६)**

  अर्थ :– मनुष्य के भाग्य के लिए कुछ भी दुष्कर नहीं है।

- **न खल्वविघ्नामभिलषितमधन्यैः प्राप्यते। (प्रिय०द्वि० अंक पृ0सं0– ३८)**

  अर्थ :– विना विघ्न मनोरथ का फल अभागों को नहीं मिलता है।

➢ **कमलिनीबद्धानुरागोऽपि मधुकरों मालतीं प्रेक्ष्याभिनवरसा ।**

स्वादलम्पटः कुतस्तामनासाद्य स्थितिं करोति।। (प्रिय०तृ०अंक पृ0सं0–४५)

अर्थ :– कमलिनी से अनुराग रखने वाला भ्रमर भी मालती को देखकर अभिनव रस के आस्वादन के लिए लालायित होकर उसे बिना पाये कहाँ धीरज रखता है।

➢ **प्रायो यत्किंतञ्चिदपि प्राप्नोत्युत्कर्षमा श्रयान्महतः।**

मत्तेभकुम्भतटगतमेति हि श्रृंगारतां भस्म।। (प्रियदर्शिका ३/१)

अर्थ :– कोई भी वस्तु अथवा मनुष्य महान् आश्रम प्राप्त करने पर उत्कर्ष को प्राप्त करता है। ठीक उसी प्रकार जैसे – मतवाले हाथी के कुम्भस्थल पर पहुँचा हुआ भस्म भी श्रृंगार कहलाने लगता है।

➢ **सदृशाः सदृशे रज्यन्त । (प्रियदर्शिका तृतीय अंक पृ0सं0 –५७)**

अर्थ :– सबको अपने समान जन से मिलने पर प्रसन्नता होती है।

➢ **न युक्तमस्थाने रसभङ्गं कृत्वा गन्तुम्। (प्रियदर्शिका तृतीय अंक पृ0सं0 –७१)**

अर्थ :– किसी भी सभा के मध्य के उठकर जाना उचित नहीं होता है। इसलिए महारानी यह उचित नहीं है कि आप बीच में ही रसभङ्गं करके चली जाएँ।

➢ **अति दुर्जनः खलु लोकः । (प्रिय० च० अंक पृ0सं0– ६८)**

अर्थ :–लोक बड़ा दुर्जन होता है। अर्थात् संसार में लोग बड़े ही दुर्जन होते हैं।

➢ **वामे विधौ न हि फलन्त्यभिवाञ्छितानि। (प्रियदर्शिका ४/८)**

अर्थ :– भाग्य के विपरीत रहने पर मनोरथ सिद्ध नहीं हो पाते है। अर्थात् मनुष्य का भाग्य विपरीत होने पर मनुष्य के मनोरथ सिद्ध नहीं हो पाते हैं।

तापसवत्सराजचरितम् की प्रमुख सूक्तियाँ

- **न भगवती भवितव्यता अतिक्रमितुं पार्यते। (तापसवत्स०च ०अंक पृ0सं0– १२0)**

  अर्थ :– होनहार को कोई टाल नहीं सकता। अर्थात् होनहार व्यक्ति को सफलता प्राप्त करने से कोई रोक नहीं सकता।

- **अये कथमयं क्षतेक्षारावसेकः। (तापसवत्स० द्वितीय अंक पृ0सं0– ४६)**

  अर्थ :– अरे यह कटे पर नमक जैसा। वासवदत्ता और यौगन्धरायण का अग्नि में जल जाना कटे पर नमक जैसा है।

- **अशुभस्य कालहरणं मुहूर्त्तमपि बहु मन्यन्ते नयवेदिनः ।**

  (तापसवत्स० द्वि० अंक पृ0सं0– ५६)

  अर्थ :– नीतिज्ञ लोग बुरी बात में एक क्षण की भी देरी को बहुत अधिक समझते हैं।

- **समग्रदुःखानां जननी भगवती सेवा। (तापसवत्स० तृ० अंक पृ0सं0– ६२)**

  अर्थ :– अब सभी प्रकार के दुःखों को पैदा करने वाली भगवती की सेवा भी थोड़ी देर विश्राम करे।

- **प्रियसखीति भणसि न च दुःखसंविभागं करोषीति युज्यत् एतत्।**

  (तापसवत्स० तृ० अंक पृ0सं0– ७२)

  अर्थ :– वासवदत्ता एक ओर तुम मुझे प्रिय सखी बोल रही हो और दूसरी ओर दुःख को बाँटना नहीं चाहती। क्या यह ठीक है।

- **गृहिभिस्सह साङ्गत्यमन्तरोयो विरागिणाम्। (तापसवत्स० ३/४)**

  अर्थ :– कल्याण चाहने वाले तथा कन्द मूल फलों को खाने वाले संन्यासियों का भी गृहस्थियों के साथ सम्पर्क विघ्न ही उपस्थित करता है।

- **अस्ति क्वचित्केनचिदुपायेन परलोकगतः प्राप्यते।**

  (तापसवत्स० च० अंक पृ0सं0 – १२८)

अर्थ :– कहीं किसी ने किसी उपाय से मरे हुए व्यक्ति को फिर प्राप्त किया है।

- **वियोग विषये किन्तु स्त्रियः कातराः।।** **(तापसवत्स० १/६)**

  अर्थ :– स्त्रियाँ पति से बिछुड़ने पर घबराती हैं। यह एक कठिनाई है।

- **स्वार्थः स्वयं चिन्त्यताम्।** **(तापसवत्स० १/६)**

  अर्थ :– मनुष्य को अपनी भलाई के विषय में स्वयं सोचना चाहिए। अर्थात् अपनी भलाई के विषय में स्वयं सोचो।

- **किमथवा प्रेमासमाप्तोत्सवः।** **(तापसवत्स० १/१४)**

  अर्थ :– प्रेम का उत्सव कभी समाप्त नहीं होता ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अनङ्गहर्ष, तापसवत्सराजचरितम्, सम्पादक, प्रो० इन्द्रदत्त उनियाल, साहित्य भण्डार, सुभाष बाजार, मेरठ, प्रथम संस्करण – 1963।
2. आप्टे वामन शिवराम, संस्कृत – हिन्दी शब्दकोश, कमल प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली संस्करण – 2005।
3. उपाध्याय आचार्य बलदेव, संस्कृत साहित्य का इतिहास, चौखम्बा संस्कृत सीरीज ऑफिस वाराणसी संस्करण – 2001।
4. उपाध्याय आचार्य बलदेव, भासनाटकचक्रम्, व्याख्याकार आचार्य श्री रामचन्द्र मिश्रः, चौखम्भा विद्याभवन वाराणासी संस्करण, द्वितीय विक्रम संवत् 2029, ई० 1973।
5. महाकवि कालिदास, अभिज्ञान शाकुन्तलम्, व्याख्याकार डॉ० कैलाशनाथ द्विवेदी, सबलाइम पब्लिकेशन्स, जयपुर, भारत, प्रथम संस्करण – 2005।
6. गोस्वामी बलभद्र प्रसाद शास्त्री प्रणीत सेतुबन्धम् का समीक्षात्मक अध्ययन, कु० सुनीता जोशी।

7. झा डॉ० उदयशंकर, संस्कृत शास्त्र मञ्जूषा, चौखम्बा सुरभारती, वाराणासी संस्करण, प्रथम संस्करण 2012।
8. डॉ० टण्डन किरण, छन्दोऽलंकार परिचयः, जनता प्रेस नैनीताल, प्रथम संस्करण 1979।
9. डॉ० टण्डन किरण, महाकवि ज्ञानसागर के काव्य एक अध्ययन, प्रकाशकः ईस्टर्न बुक लिंकर्स 5825, न्यू चन्द्रावल, जवाहर नगर दिल्ली, प्रथम संस्करण – 1984।
10. तिवारी डॉ० शशि, संस्कृत साहित्य का इतिहास, भारतीय विद्या प्रकाशन दिल्ली, संस्करण – 2003।
11. द्विवेदी, डॉ० प्रभुनाथ, महाकवि हर्षवर्धन, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, बी– 137 वर्मपुरा नई दिल्ली, संस्करण– 1998।
12. आचार्य धनञ्जय दशरूपकम्, सम्पादक शास्त्रिणा डॉ० श्रीनिवास,साहित्य भण्डार, सुभाष बाजार मेरठ, त्रयोदश प्रथम संस्करण – 1969।
13. पाण्डेय डॉ० रमेश कुमार, भरतमुनि साहित्यशास्त्र के आदि आचार्य, तारा प्रिटिंग वर्क्स, कमच्छा, वाराणासी, संस्करण प्रथम– 1992
14. पीयूष वर्ष जयदेव, चन्द्रालोकः, सम्पादक डॉ० गङ्गासागर रायः, चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणासी, सप्तम संस्करण वि० सं०– 2060
15. डॉ० प्रमिला, संस्कृत नाटिकाओं का नाट्यशास्त्रीय अध्ययन, संजय प्रकाशन, अंसारी रोड दरियागंज, दिल्ली, प्रथम संस्करण– 2006।
16. भास, स्वप्नवासवदत्तम्, व्याख्याकार आचार्य श्री शेषराज शर्मा रेग्मीः, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणासी, संस्करण 2009
17. भास, स्वप्नवासवदत्तम्, व्याख्याकार डॉ० रूपनारायण त्रिपाठी, हंसा प्रकाशन, जयपुर, संस्करण– 2008।
18. भास, प्रतिज्ञायौगन्धरायणम्, सम्पादक डॉ० गङ्गासागर रायः, चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणासी, संस्करण प्रथम, विक्रम सम्वत्– 2051।

19. भासनाटकचक्रम्, उपाध्याय डॉ०बलदेव, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, तृतीय संस्करण– 1982।
20. महाकवि भट्ट बाण, हर्षचरितम्, हिन्दी व्याख्याकार डॉ० केशवराव मुसलगाँवकर, सम्पादक डॉ० गजानन शास्त्री मुसलगाँवकर, चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, संस्करण प्रथम, विक्रम संवत्– 2049
21. भरतमुनि नाट्यशास्त्रम्, सम्पादक तथा व्याख्याकार श्री बाबूलाल शुक्ल शास्त्री, चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणासी, संस्करण प्रथम, विक्रम संवत् 2042, ई० 1985।
22. भरतमुनि नाट्यशास्त्रम्, सम्पादक तथा व्याख्याकार डॉ भवभूति शर्मा, साहित्य भण्डार, सुभाष बाजार मेरठ, पंचम संस्करण।
23. आचार्य मम्मट, काव्यप्रकाश, हिन्दी व्याख्याकार, डॉ० सत्यव्रत सिंह, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणासी, पुर्नमुद्रित संस्करण – 2007।
24. महथा डॉ० निवारण, भास और सोमदेव भट्ट का उदयन, ईस्टर्न बुक लिंकर्स दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012।
25. मिश्रा डॉ० प्रेमलता, संस्कृत नाटिका उद्भव एवं विकास, प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण, प्रथम 2006।
26. रामचन्द्र, गुणचन्द्र, नाट्यदप्रणम् थानेशचन्द्र उप्रेती, परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली प्रथम संस्करण – 1986।
27. वत्सराज उदयन की कथा पर आधारित भास के रूपकों स्वप्नवासवत्तम् एवं प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् का नाट्य शास्त्रीय अध्ययन, कु० भावना त्रिपाठी।
28. आचार्य विश्वनाथ साहित्य दप्रण, डॉ० विद्यालंकार निरूपण, सुभाष बाजार, मेरठ, द्वितीय संस्करण।
29. सिंह डॉ० (श्रीमती) नीलम, संस्कृत रूपकों के प्रमुख नाट्य शिल्प, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर प्रथम संस्करण जुलाई 1999।
30. सिन्हा जय श्री, संस्कृत नाटिका विमर्श, कैपिटल पब्लिशिंग हाऊस दिल्ली 6 संस्करण वर्ष 1986।

31. शर्मा डॉ० रणजीत, छन्दोज्ञानम्, ज्ञानप्रकाशन सुभाष बाजार, मेरठ नवीन संस्करण।
32. शर्मा डॉ० श्याम, संस्कृत साहित्य के ऐतिहासिक नाटक, देवनागर प्रकाशन, जयपुर।
33. हर्षदेव, रत्नावली, सम्पादक डॉ० शिवबालक द्विवेदी, हंसा प्रकाशन, जयपुर, संस्करण – 2004।
34. हर्षदेव, प्रियदर्शिका, हिन्दी टीकाकार, पण्डित श्री रामचन्द्र मिश्रः, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणासी संस्करण – 1976, पुर्नमुद्रित संस्करण – 2009।
35. श्री हर्षदेव रत्नावली, सम्पादक, ब्रजरत्न भट्टाचार्य, भारतीय विद्या प्रकाशन दिल्ली।
36. आचार्य क्षेमेन्द्र, औचित्यविचारचर्चा, सम्पादक, कपिलदेव द्विवेदी, हिन्दी टीकाकार डॉ० बुद्धिदेव शर्मा।
37. त्रिपाठी राधाबल्लभ, नाट्यशास्त्र विश्वकोश, प्रतिभा प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण – 1999।
38. त्रिपाठी डॉ० ब्रह्मानन्द, अनुवाद चन्द्रिका, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणासी, संस्करण 2009।

अन्य ग्रन्थ

1 परीक्षा मंथन सामान्य ज्ञान, अग्रवाल अनिल, मंथन प्रकाशन, सिविल लाइन्स, इलाहाबाद, संस्करण 2009
2 यू० जी० सी०,नेट०/सेट० संस्कृत डॉ० मिथिलेश पाण्डेय, उपकार प्रकाशन आगरा–2